भारत में समाजवादी आंदोलन और आचार्य नरेंद्र देव: राष्ट्रीय आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० विवेका नंद

चतुर चक, उधादीह, भागलपुर, बिहार

सार

प्रस्तुत शोध आलेख भारत में समाजवादी आंदोलन के ऐतिहासिक विकास तथा उसके राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के साथ अंतर्संबंधों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से इस अध्ययन में आचार्य नरेंद्र देव के वैचारिक योगदान, उनकी राजनीतिक भूमिका तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर समाजवादी प्रवृत्ति के संस्थानीकरण में उनके महत्वपूर्ण प्रयासों का आलोचनात्मक परीक्षण किया गया है। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन विविध वैचारिक धाराओं से प्रभावित हो रहा था, उस समय समाजवादी विचारधारा ने स्वतंत्रता के लक्ष्य को सामाजिक-आर्थिक समानता के व्यापक दृष्टिकोण से जोड़ने का कार्य किया। आचार्य नरेंद्र देव इस प्रक्रिया के प्रमुख वैचारिक स्तंभ के रूप में उभरते हैं, जिन्होंने भारतीय संदर्भ में समाजवाद को केवल आर्थिक सिद्धांत तक सीमित न रखकर उसे नैतिकता, लोकतंत्र और मानवीय मूल्यों के साथ समन्वित करने का प्रयास किया। उन्होंने मार्क्सवादी चिंतन के वर्ग-संघर्ष और ऐतिहासिक भौतिकवाद के तत्वों को स्वीकार करते हुए गाँधीवादी अहिंसा, सत्य और नैतिक राजनीति के सिद्धांतों के साथ उसका संतुलित समायोजन प्रस्तुत किया। इस प्रकार उनका दृष्टिकोण न तो पूर्णत: पारंपरिक मार्क्सवादी था और न ही केवल गाँधीवादी, बल्कि यह भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप एक संश्लेषणात्मक विचारधारा का रूप लेता है।

यह शोध मुख्यत:, जिससे आचार्य नरेंद्र देव के विचारों और उनके व्यावहारिक राजनीतिक हस्तक्षेपों की गहन समझ विकसित की गई है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समाजवादी आंदोलन ने न केवल स्वतंत्रता संघर्ष को वैचारिक गहराई प्रदान की, बल्कि स्वतंत्र भारत के सामाजिक-आर्थिक पुनर्निर्माण की दिशा भी निर्धारित की। अत: आचार्य नरेंद्र देव का योगदान भारतीय राजनीतिक चिंतन और समाजवादी परंपरा के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक माना जा सकता है।

शब्द कुँजी: समाजवाद, आचार्य नरेंद्र देव, राष्ट्रीय आंदोलन, कांग्रेस समाजवादी दल, मार्क्सवाद, भारतीय राजनीतिक चिंतन।

1. प्रस्तावना:

भारत में समाजवादी विचारधारा का उदय मात्र एक राजनीतिक परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक दमन, आर्थिक विषमता और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध उभरती हुई व्यापक जनचेतना का संगठित रूप था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में जब भारतीय समाज ब्रिटिश शासन के आर्थिक शोषण, सामंती संरचनाओं तथा वर्गीय असमानताओं से जूझ रहा था, तब राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ एक ऐसी वैचारिक धारा भी विकसित हो रही थी, जो स्वतंत्रता को केवल राजनीतिक सत्ता-परिवर्तन तक सीमित न मानकर सामाजिक-आर्थिक पुनर्गठन से जोड़कर देखती थी। इसी संदर्भ में समाजवाद भारतीय बौद्धिक और राजनीतिक विमर्श का एक महत्त्वपूर्ण अंग बनकर उभरा।

इस वैचारिक परिवर्तन के केंद्र में आचार्य नरेंद्र देव (1889-1956) जैसे चिंतक एवं कर्मयोगी व्यक्तित्व थे, जिन्होंने भारतीय समाजवादी आंदोलन को सैद्धांतिक आधार प्रदान करने के साथ-साथ उसे राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया। वे बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। एक ओर वे गहन दार्शनिक एवं इतिहास बोध से संपन्न विद्वान थे, तो दूसरी ओर एक सक्रिय राजनीतिक नेता और प्रतिबद्ध राष्ट्रसेवी भी। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर समाजवादी प्रवृत्तियों को वैचारिक स्पष्टता और संगठनात्मक दिशा प्रदान की, जिससे स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक सामाजिक आधार प्राप्त हुआ।

आचार्य नरेंद्र देव का चिंतन इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है कि उन्होंने भारतीय परिस्थितियों के

अनुरूप समाजवाद की पुर्नव्याख्या की। उनके अनुसार, राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब वह सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और मानवीय गरिमा के मूल्यों से जुड़ी हो। प्रस्तुत शोध आलेख इसी ऐतिहासिक और वैचारिक परिप्रेक्ष्य में भारत में समाजवादी आंदोलन के उद्भव एवं विकास का विश्लेषण करते हुए आचार्य नरेंद्र देव के योगदान का समग्र मूल्यांकन करता है।[2]

2. भारत में समाजवाद का ऐतिहासिक संदर्भ:

भारत में समाजवादी विचारधारा का प्रवेश बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में एक व्यापक वैश्विक एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत हुआ। 1917 की रूसी क्रांति ने विश्व राजनीति की दिशा को निर्णायक रूप से प्रभावित किया और उपनिवेशित देशों के स्वतंत्रता आंदोलनों को एक नई वैचारिक प्रेरणा प्रदान की। भारत में भी इस क्रांति के प्रभाव से अनेक बुद्धिजीवियों एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने यह अनुभव किया कि राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय की स्थापना अनिवार्य है। इसी संदर्भ में मानवेंद्रनाथ राय (एम.एन. राय) जैसे विचारकों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन की नींव रखी, जिसने भारतीय समाज में समाजवादी चेतना के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यद्यपि समाजवाद और साम्यवाद के बीच सैद्धांतिक भिन्नताएँ विद्यमान थीं, तथापि प्रारम्भिक चरण में दोनों धाराओं के बीच घनिष्ठ अंत:क्रिया देखने को मिलती है। इस काल में समाजवाद केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा न रहकर श्रमिकों, किसानों और निम्न वर्गों की वास्तविक समस्याओं से जुड़ने लगा। 1920 के दशक में भारत में श्रमिक संगठनों का तीव्र विकास हुआ और अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना ने इस प्रक्रिया को संस्थागत रूप प्रदान किया। लाला लाजपत राय जैसे राष्ट्रीय नेताओं की भागीदारी ने श्रमिक आंदोलन को वैधता और व्यापकता प्रदान की।

इसके समानांतर, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर भी एक प्रगतिशील एवं वामपंथी प्रवृत्ति विकसित हो रही थी। जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस जैसे युवा नेताओं ने राष्ट्रीय आंदोलन को अधिक उग्र, जनोन्मुख और समाजवादी दिशा देने का प्रयास किया। 1929 के लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' के प्रस्ताव का पारित होना इस वैचारिक परिवर्तन का प्रतीक था।

इसके अतिरिक्त, 1929-33 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी ने पूंजीवादी व्यवस्था की अंतर्निहित कमजोरियों को उजागर कर दिया, जिससे समाजवाद एक व्यवहारिक विकल्प के रूप में उभरकर सामने आया। इस प्रकार, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के समन्वय ने भारत में समाजवादी विचारधारा के विकास हेतु एक अनुकूल ऐतिहासिक आधार तैयार किया।[3]

3. कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना और आचार्य नरेंद्र देव

1934 में कांग्रेस समाजवादी दल (Congress Socialist Party– CSP) की स्थापना भारतीय राजनीतिक इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना के रूप में परिलक्षित होती है। यह वह काल था जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर एक ऐसे संगठित समूह की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी, जो स्वतंत्रता संग्राम को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित न रखकर उसे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की दिशा में भी अग्रसर करे। इस उद्देश्य से आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया तथा अन्य प्रगतिशील नेताओं ने मिलकर इस दल की स्थापना की। यह दल कांग्रेस की संरचना के भीतर रहकर कार्य करता था, किंतु उसकी वैचारिक प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से समाजवादी सिद्धांतों पर आधारित थी।[4]

आचार्य नरेंद्र देव को कांग्रेस समाजवादी दल का प्रथम अध्यक्ष चुना गया, और उन्होंने इसके वैचारिक स्वरूप को स्पष्टता एवं गहराई प्रदान की। उनके नेतृत्व में CSP ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक वैकल्पिक वैचारिक दिशा देने का प्रयास किया, जिसमें सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और वर्गीय शोषण के उन्मूलन को केंद्रीय स्थान प्राप्त था।

आचार्य नरेंद्र देव का जन्म 31 अक्टूबर 1889 को उत्तर प्रदेश के सीतापुर में हुआ। उनका मूल नाम अविनाशीलाल था, किंतु वे अपने विद्वत्तापूर्ण व्यक्तित्व और शिक्षण-कार्य के कारण 'आचार्य' की उपाधि से सम्मानित

हुए। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की और आगे चलकर काशी विद्यापीठ के कुलपति के रूप में कार्य किया।[5] शिक्षा और राजनीति के क्षेत्रों में उनका योगदान समान रूप से उल्लेखनीय रहा, जिससे उनके व्यक्तित्व में वैचारिक गहराई और व्यावहारिक सक्रियता का अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है।

आचार्य नरेंद्र देव का स्पष्ट मत था कि भारत की वास्तविक मुक्ति केवल औपनिवेशिक शासन से राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने से संभव नहीं है। उनके अनुसार, जब तक समाज में व्याप्त आर्थिक विषमताओं, जमींदारी शोषण और वर्गीय असमानताओं का अंत नहीं किया जाता, तब तक स्वतंत्रता अधूरी रहेगी। उन्होंने अपने लेखन और वक्तव्यों में बार-बार इस बात पर बल दिया कि आर्थिक न्याय, उत्पादन के साधनों का सामाजिक नियंत्रण तथा श्रमिकों और किसानों के अधिकारों की रक्षा समाजवादी कार्यक्रम के मूल तत्व होने चाहिए। इस प्रकार, उन्होंने भारतीय संदर्भ में समाजवाद को एक व्यापक परिवर्तनकारी परियोजना के रूप में प्रस्तुत किया।[6]

4. आचार्य नरेंद्र देव की वैचारिक दृष्टि मार्क्सवाद और गाँधीवाद का समन्वय:

आचार्य नरेंद्र देव की विचारधारा की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह थी कि उन्होंने मार्क्सवादी विश्लेषण को भारतीय संदर्भ में ढालने का प्रयास किया। वे मार्क्सवाद के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism) से सहमत थे, किन्तु यांत्रिक रूप से पाश्चात्य सिद्धांतों को भारत पर आरोपित करने के पक्ष में नहीं थे। उनका दृष्टिकोण था कि भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विशिष्टताओं को ध्यान में रखकर ही समाजवाद की रणनीति बनाई जानी चाहिए।

गाँधीजी के प्रति उनका रूख जटिल और द्विआयामी था। एक ओर वे गाँधीजी की नैतिक शक्ति और जन-आंदोलन की पद्धति को मान्यता देते थे, वहीं दूसरी ओर गाँधीजी के आर्थिक विचारों-विशेषत: वर्ग-सहयोग के सिद्धांत—से उनकी असहमति थी। नरेंद्र देव का मत था कि वर्ग-संघर्ष एक ऐतिहासिक सत्य है और इसे नकारकर सामाजिक परिवर्तन संभव नहीं। इस प्रकार उन्होंने गाँधीवाद और मार्क्सवाद के बीच एक रचनात्मक संवाद स्थापित करने का प्रयास किया।

आचार्य नरेंद्र देव बौद्ध दर्शन के भी प्रकांण्ड विद्वान थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'बौद्ध धर्म-दार्शानक में बौद्ध नीतिशास्त्र और समाजवाद के बीच समानताएँ दर्शाई।[9] उनके अनुसार बुद्ध की करुणा, समता और अनात्मवाद की शिक्षाएँ समाजवादी विचार के साथ सहमेल रखती हैं। यह उनके चिंतन की मौलिकता और गहराई का प्रमाण है।

5. राष्ट्रीय आंदोलन में समाजवादियों की भूमिका:

कांग्रेस समाजवादी दल ने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई ऊर्जा और व्यापकता प्रदान की। 1934-42 के काल में इस दल के कार्यकर्ताओं ने किसानों और मजदूरों के बीच जाकर काम किया। अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना(1936) में समाजवादियों की प्रमुख भूमिका थी।[10] स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में इस संगठन ने जमींदारी उत्पीड़न के विरुद्ध किसानों को जागृत किया।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में समाजवादियों ने विशेष भूमिका निभाई। जब गाँधीजी और कांग्रेस के अधिकांश नेता जेल में थे, तब जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया और अन्य समाजवादियों ने भूमिगत रहकर आंदोलन को जीवित रखा।[11] आचार्य नरेंद्र देव भी इस काल में बार-बार कारावास में रहे। उन्होंने जेल में रहते हुए भी अपना लेखन और चिंतन जारी रखा।

कांग्रेस समाजवादी दल ने 1936 के फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन में कृषि सुधारों का विस्तृत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में भूमि-सुधार, ऋण-मुक्ति और ग्रामीण विकास के ठोस प्रस्ताव थे।[12] आचार्य नरेंद्र देव इस अधिवेशन के प्रमुख सूत्रधारों में थे और उन्होंने कांग्रेस को प्रगतिशील आर्थिक नीति अपनाने के लिए बाध्य किया।

6. नेहरू-नरेंद्र देव संबंध और वैचारिक समानता-भिन्नता

जवाहरलाल नेहरू और आचार्य नरेंद्र देव के बीच वैचारिक निकटता थी। दोनों समाजवाद के प्रति प्रतिबद्ध थे। 1936 में लखनऊ और फैजपुर अधिवेशनों में नेहरू

की अध्यक्षता में कांग्रेस ने प्रगतिशील आर्थिक प्रस्ताव पारित किए।[13] नरेंद्र देव ने नेहरू के इस झुकाव का स्वागत किया, किन्तु वे यह भी जानते थे कि नेहरू का समाजवाद अधिक उदार और कम क्रांतिकारी था।

1948 में कांग्रेस ने अपने नए संविधान में यह प्रावधान कर दिया कि कोई भी समानांतर दल का सदस्य कांग्रेस का सदस्य नहीं रह सकता। इससे कांग्रेस समाजवादी दल को कांग्रेस से बाहर जाना पड़ा।[14] इस निर्णय से आचार्य नरेंद्र देव अत्यंत व्यथित हुए क्योंकि उनका मानना था कि जन-आंदोलन की वृहत् धारा से अलग होकर समाजवाद प्रभावहीन हो जाएगा।

7. समाजवादी दल और स्वतंत्रता के बाद की राजनीति

1948 में जब कांग्रेस समाजवादी दल स्वतंत्र हो गया, तब आचार्य नरेंद्र देव उसके प्रमुख नेता बने। 1952 के प्रथम आम चुनाव में समाजवादी दल ने सीमित सफलता प्राप्त की। आचार्य नरेंद्र देव आम चुनाव में बाराबंकी से पराजित हुए, किन्तु बाद में उपचुनाव में विजयी होकर संसद में पहुँचे।[15] वे संसद में भी अपनी विद्वतापूर्ण वाणी और तर्कशक्ति से प्रभावशाली रहे।

स्वतंत्र भारत में आचार्य नरेंद्र देव ने लखनऊ विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ के कुलपति के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनका मानना था कि समाजवादी समाज के निर्माण के लिए शिक्षा का लोकतांत्रिकरण अत्यावश्यक है।[16] 19 फरवरी 1956 को उनका निधन हो गया, जो भारतीय समाजवाद के लिए एक अपूरणीय क्षति थी।

8. समाजवादी आंदोलन की सीमाएँ और आलोचनात्मक मूल्यांकन

भारतीय समाजवादी आंदोलन की कुछ आंतरिक सीमाएँ भी थीं जिनका वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन आवश्यक है। प्रथम, समाजवादियों के बीच वैचारिक एकता का अभाव था- मार्क्सवादी, गाँधीवादी और मानवतावादी धाराओं के मध्य तनाव बना रहा।[17] द्वितीय, जनाधार की दृष्टि से समाजवादी दल कांग्रेस की तुलना में बहुत सीमित था। तृतीय, समाजवादियों ने जाति और धर्म की समस्याओं को वर्ग-विश्लेषण के दायरे में समेटने का प्रयास किया, जो भारतीय सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से अपर्याप्त था।[18] डॉ भीमराव राव अम्बेडकर ने इस सीमा की ओर बारंबार ध्यान आकृष्ट किया था। चतुर्थ, 1948 के बाद कांग्रेस से अलगाव ने समाजवादी दल को राजनीतिक हाशिये पर धकेल दिया। फिर भी, वैचारिक स्तर पर उनका योगदान अतुलनीय है।

9. आचार्य नरेंद्र देव की साहित्यिक-वैचारिक देन:

आचार्य नरेंद्र देव केवल एक राजनेता नहीं थे, वे एक समृद्ध साहित्यिक और वैचारिक विरासत के निर्माता भी थे। उनकी प्रमुख कृतियों में ''समाजवाद और राष्ट्रीय क्रांति', राष्ट्रीयता और समाजवाद'', और ''बौद्ध धर्म-दर्शन'' विशेष महत्त्व की हैं।[19] ये कृतियाँ भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनके भाषण और निबंध हिन्दी साहित्य की दृष्टि से भी उल्लेखनीय हैं। उन्होंने हिन्दी को अपनी राजनीतिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और यह सिद्ध किया कि गूढ़ राजनैतिक-आर्थिक विचारों को सरल, प्रभावशाली हिन्दी में व्यक्त किया जा सकता है।[20] काशी विद्यापीठ के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा के आदर्श को साकार करने का प्रयास किया।

10. निष्कर्ष:

भारत में समाजवादी आंदोलन और राष्ट्रीय आंदोलन के अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि आचार्य नरेंद्र देव भारतीय इतिहास के एक अनन्य व्यक्तित्व थे। उन्होंने एक ऐसी वैचारिक परंपरा की नींव रखी जो मार्क्सवाद के वैज्ञानिक पद्धति, गाँधीवाद की नैतिक शक्ति और बौद्ध दर्शन की करुणा को एकीकृत करने का प्रयास करती है। भले ही उनका दल चुनावी दृष्टि से सीमित सफलता प्राप्त कर सका, किन्तु वैचारिक इतिहास में उनका योगदान अमूल्य है। आज के भारत में जब आर्थिक असमानता, जातिगत भेदभाव और सांप्रदायिक तनाव जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं। आचार्य नरेंद्र देव का समाजवादी दर्शन पुन: प्रासंगिक हो उठता है। उनकी यह मान्यता कि सामाजिक न्याय और आर्थिक समता के बिना राजनीतिक लोकतंत्र अधूरा है- आज भी उतनी ही सत्य है जितनी

उनके काल में थी। अतः यह कहना उचित होगा कि आचार्य नरेंद्र देव का अध्ययन न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से, बल्कि समकालीन राजनीतिक चिंतन की दृष्टि से भी अनिवार्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. ओवरस्ट्रीट, जी. डी. एवं विंडमिलर, एम. (1959). भारत में साम्यवाद, बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, पृष्ठ 23।
2. मेहरोत्र, एस. आर.(1971), भारत और राष्ट्रमंडल, 1885-1929. लंदन: जॉर्ज एलेन एंड अनविन, पृष्ठ 142।
3. टॉमलिनसन, बी. आर. (1979), राज की राजनीतिक अर्थव्यवस्था, 1914-1947, लंदन: मैकमिलन, पृष्ठ. 98-101।
4. लिमये, मधु (1990), गैर-कांग्रेसीवाद का जन्म: समाजवादी आंदोलन, 1934-1956, दिल्ली: बी.आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, पृष्ठ 14-19।
5. मुखर्जी, अरुण (1966) आचार्य नरेंद्र देव: उनका जीवन और समय, दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ 5।
6. देव, नरेंद्र (1946), समाजवाद और राष्ट्रीय क्रांति, बंबई: पद्मा पब्लिकेशंस, पृष्ठ. 78।
7. राय, रामाश्रय (1984) स्व और समाज: गांधीवादी चिंतन का अध्ययन, नई दिल्ली: सेज, पृष्ठ 201-205।
8. मिश्रा, बी. बी. (1976). भारतीय राजनीतिक दल. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ट 315।
9. देव, आचार्य नरेंद्र (1956), बौद्ध धर्म-दर्शन, वाराणसी: काशी विद्यापीठ प्रकाशन, पृष्ठ 112-118।
10. नाडकर्णी, एम. वी. (1987), भारत में किसान आंदोलन, अहमदाबाद: एलाइड पब्लिशर्स, पृष्ठ-44-48 ।
11. मेहता, उषा (1997), 'कांग्रेस समाजवादी और भारत छोड़ो आंदोलन' में घनश्याम शाह (संपा.), सामाजिक आंदोलन और राज्य, सेज प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 188 ।
12. जैदी, ए. एम. एवं जैदी, एस. जी. (संपा.) (1985), भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस विश्वकोश, खंड ग. दिल्ली: एस. चंद, पृष्ठ 342 ।
13. गोपाल, एस. (1975), जवाहरलाल नेहरू: एक जीवनी, खंड I, दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 198-202 ।
14. पट्टाभिराम, एम. (1967), भारत में आम चुनाव 1967. बंबई: एलाइड पब्लिशर्स, पृष्ठ 6 ।
15. सीतारमैया, पट्टाभि (1955), भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास, खंड II दिल्ली: एस. चंद, पृष्ठ 679 ।
16. राव, डी. वी. एस. (1988), 'नरेंद्र देव और समाजवादी शिक्षा', जर्नल ऑफ इंडियन हिस्ट्री, खंड LXVI भाग 1-3, पृष्ठ 221।
17. झा, शिगा नंदन (1970). 'भारत में समाजवादी आंदोलन', इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 5, अंक 3-5, पृष्ठ 181।
18. जेलियट, एलेनोर (1992). अस्पृश्य से दलित तक, दिल्ली: मनोहर, पृष्ठ 141-143।
19. देव, नरेंद्र (1936), राष्ट्रवाद और समाजवाद, इलाहाबाद: सोशलिस्ट बुक सेंटर, पृष्ठ 1-12।
20. तिवारी, रामचंद्र (2001), हिंदी गद्य साहित्य और राजनीतिक विमर्श, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 234।